देवनागरी का मानकीकरण और अशुद्धि का भ्रम

देवनागरी लिपि का मानकीकरण अनेक बार विभिन्न संस्थाओं द्वारा किया गया है। इनमें शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित संस्था **केंद्रीय हिंदी निदेशालय** का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस संस्था ने मानकीकरण संबंधी अपने सुझावों में समय-समय पर कई परिवर्तन भी किए हैं।

इस संबंध में ध्यान देने योग्य बातें हैं—

- हिंदी / हिन्दी, घंटा / घण्टा, संबंध / सम्बन्ध
- मिलकर / मिल कर, दूधवाला / दूध वाला, जानेवाला / जाने वाला
- आवाज़ / आवाज, साफ़ / साफ, ग़ज़ल / गजल, क़ब्र / कब्र
- मुर्गा / मुरगा, कुर्सी / कुरसी, बिल्कुल / बिलकुल, मुस्कान / मुसकान
- मोहब्बत / मुहब्बत, शिक्षाविद् / शिक्षाविद, भाषाविद् / भाषाविद
- द्वारा / द्वारा, पद्धति / पद्धति
- बुद्ध / बुद्ध, शुद्ध / शुद्ध
- द्य / द्य

ऊपर दिए गए सभी रूप देवनागरी को लिखने के अलग-अलग तरीके हैं। इनमें से किसी एक प्रयोग को मानक तो कहा जा सकता है, किंतु इनमें से किसी को अशुद्ध या गलत नहीं कहा जा सकता। विद्यार्थियों को इन सभी पद्धतियों से परिचित होना आवश्यक है।

इसी कारण इस व्याकरण पुस्तक शृंखला में देवनागरी लिपि के इन सभी रूपों का जहाँ-तहाँ प्रयोग किया गया है। साथ ही, इस पुस्तक शृंखला में **केंद्रीय हिंदी निदेशालय**, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा देवनागरी लिपि के मानकीकरण के सुझावों को अधिकांशतः अपनाया गया है।